ख़ुदा

एक ही

है

ख़ुदा

एक ही

है

ḳhudā ek hī hai

God is One
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

तौहीद सच्चे मज़हब की कसौटी है

तौहीद सच्चे मज़हब की कसौटी है। अल्लाह तआला ने अपने बारे में ख़ुद भी फ़रमाया है कि वह एक है, वह क़ादिरे-मुतलक़ है और उसका कोई सानी नहीं। तमाम ज़मानों में नबियों ने इसकी शहादत दी है, और मुक़द्दस किताबें भी इसकी तसदीक़ करती हैं। यहूदियत, ईसाइयत और इसलाम इस सच्चाई पर मुत्तफ़िक़ हैं।

दुनिया की तारीख़ में यह कोई नई तालीम नहीं है क्योंकि शुरू ही से तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस ने ख़ुदा की वहदानियत की साफ़ और वाज़िह तालीम दी है।

कुछ लोगों का एतराज़

ताहम बाज़ लोग इस ग़लतफ़हमी का शिकार हैं कि ईसाई एक से ज़ायद ख़ुदाओं को मानते हैं। क्या यह दुरुस्त है?

तौरेत में तौहीद

तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की मारिफ़त फ़रमाया है कि

> सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। (इस्तिसना 6:4)

कट्टर यहूदी दिन में दो दफ़ा इसकी तिलावत करते हैं। यह उनके मज़हब की लाज़िमी और अटल बुनियाद है।

ज़बूर में तौहीद

ज़बूर शरीफ़ में हज़रत दाऊद ने इक़रार किया कि

> तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू ही ख़ुदा है। (ज़बूर 86:10)

इससे ज़ाहिर है कि हज़रत दाऊद भी इस हक़ीक़त की तसदीक़ करते हुए अल्लाह को वाहिद और लाशरीक तसव्वुर करते थे।

इंजील में तौहीद

आगे बढ़कर हम इंजील मुक़द्दस में तौहीद का पुरज़ोर दावा बार बार पढ़ते हैं। मसलन हज़रत ईसा मसीह ने तौरेत शरीफ़ की मज़कूर आयत की तसदीक़ करके फ़रमाया,

> सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। (मरक़ुस 12:29)

इंजील जलील के दीगर मक़ामात पर भी यही इक़रारे-अज़ीम पाया जाता है मसलन

> रब के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है ...फ़क़त एक ही ख़ुदा है। (1 कुरिंथियों 8:4,6)

> अल्लाह ...एक ही है। (गलतियों 3:20)

> एक ही ख़ुदा है। (1 तीमुथियुस 2:5)

> आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही ख़ुदा है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह है।
> (याक़ूब 2:19)

ग़रज़ न सिर्फ़ कुरान शरीफ़ बल्कि इससे सदियों पहले तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस भी ख़ुदा की वहदत की तालीम से भरी पड़ी हैं। नतीजे में हुज़ूर अल-मसीह के पैरोकार इलाहों की कसरत की तरदीद करने में मुसलमानों से कम ग़ैरत नहीं रखते। वह भी ऐसे ख़याल को सरासर मकरूह ठहराते हैं।

वाहिद ख़ुदा से ताल्लुक़ किस तरह बहाल?

ताहम इस मक़ाम पर एक सवाल निहायत वाजिब और क़ाबिले-ज़िक्र है। सवाल यह है कि गुनाहआलूदा और शिकस्तादिल इनसान का इस वाहिद और लाशरीक ख़ुदा के साथ किस तरह दुरुस्त ताल्लुक़ क़ायम हो सकता है? यह मुश्किल हज़रत दाऊद ने मसीह से काफ़ी अर्सा पेशतर महसूस की जब उन्होंने ज़बूर की किताब में लिखा,

> ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है!

> ...जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो तेरी उंगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर ग़ौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह पर क़ायम किया तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
> (ज़बूर 8:3-4)

यह मसला सदियों तक हल न हुआ।

अल-मसीह के ज़रीए अल्लाह से ताल्लुक़ बहाल

बिलआख़िर हुज़ूर अल-मसीह में इस मुश्किल का हल हुआ। अल्लाह की वहदत की तालीम देते वक़्त इंजील शरीफ़ हमें यह बिशारत भी देती है कि

> एक ही ख़ुदा है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा।
> (1 तीमुथियुस 2:5)

यहाँ ख़ुदा की वहदत पर ज़ोर दिया गया है। लेकिन साथ साथ फ़रमाया गया है कि दरमियानी के वसीले से अल्लाह तक रसाई मुमकिन हो गया है। यह दरमियानी अल-मसीह हैं जिनके फ़िद्या

से हमें गुनाहों से नजात मिली है (आयत 6)। उनकी मौत से हमारे लिए वाहिद ख़ुदा तक राह खुल गई है। ख़ुदा कैसा भी क्यों न हो जब तक गुनाहगार इनसान की उस तक रसाई का वसीला मुहैया न किया जाए तब तक इनसान अपनी गुनाहआलूदा हालत में रहता है। मगर इंजील-मुक़द्दस का उम्मीदबख़्श पैग़ाम यह है कि

> अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई। (2 कुरिंथियों 5:19)

हुज़ूर अल-मसीह के वसीले से ही गुनाहगार इनसान ख़ुदाए-पाक तक रसाई हासिल कर सकता है।

गुनाह की वजह से इनसान अल्लाह की ख़ुशनूदी का मज़ा नहीं चख सकता। यह रुकावट सिर्फ़ दरमियानी के फ़िद्या के ज़रीए दूर हो सकती है। जो जुदाई गुनाह के सबब से अल्लाह और इनसान के बीच में पाई जाती है वह सिर्फ़ अल-मसीह के कफ़्फ़ारा से दूर हो सकती है।

इंजीले-मुक़द्दस में यों मरक़ूम है कि

> मसीह ...ने यह नारास्तों के लिए किया ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। (1 पतरस 3:18)

अब दावत है कि मुअज़्ज़ज़ क़ारिईन मज़ीद मालूमात के लिए तौरेत, ज़बूर और इंजील शरीफ़ का मुतालआ करें।